(नियमसार प्रवचन, पृष्ठ 23 का शेष ...)

सर्वज्ञ तीर्थंकरदेव समवशरण में विराजमान हों और इन्द्र उनकी पूजा करते हों तो भी भगवान के प्रति श्रद्धा या भक्ति का विकल्प और उनकी सन्मुखतावाला ज्ञान ये सब पराधीनता और राग है। यद्यपि वह राग पुण्यबंध का कारण है; तथापि उससे धर्म नहीं होता।

प्रश्न : और शास्त्र का अभ्यास...?

उत्तर : शास्त्र का अभ्यास भी पराधीनता और राग है। अरे भाई ! सत्य मार्ग दुनिया के हाथ ही नहीं आया। अहो ! इतना सुन्दर मार्ग ! परन्तु लोगों ने इसे सुना ही नहीं है और मानते हैं कि ऐसे ही परमात्मा अथवा गुरु की भक्ति करने से अपना कल्याण हो जायेगा। पर भाई ! इसमें रंचमात्र भी कल्याण नहीं होगा। अरे ! कल्याण तो होगा ही नहीं; अपितु एक भव भी कम नहीं होगा, क्योंकि यह भव के अभाव का उपाय ही नहीं है।

अहा ! अन्दर में विराजमान भगवान आत्मा अपना वास्तविक भगवान है, उसकी भक्ति से भव का नाश होता है। इसीलिये तो समयसार गाथा-31 में, तीर्थंकर की स्तुति में यह बात ली है।

यहाँ इस गाथा में ऐसा कहा है कि परम पारिणामिकभाव की विवक्षा का आश्रय करनेवाले सहज निश्चयनय से नित्य भगवान आत्मा अनित्य निगोदादि पर्यायों से भिन्न है।

अब यहाँ कहते हैं कि यह अंगुली, पैसा, वाणी, दाल-भात, कर्म इत्यादि जड़-मिट्टी के रजकणों का जत्था-स्कन्ध है न ! उसमें स्थित एक परमाणु एक रसवाला है, एक रंगवाला है, एक गंधवाला है और दो स्पर्शवाला है और वह परमाणु शब्द का कारण है; परन्तु आत्मा शब्द का कारण नहीं है। न तो आत्मा भाषा बोलता है और न आत्मा से भाषा होती है। अरे ! अज्ञानी को जगत के तत्त्वों का पता नहीं है और बाहर के क्रियाकाण्ड से धर्म होना मानता है; परन्तु यह तो मूढ़ता है। **(क्रमशः)**

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 26 298 अंक : 10

निरखत जिनचन्द्र वदन...

निरखत जिनचंद्र-वदन, स्वपदसुरुचि आई।।
प्रगटी निज आन की पिछान ज्ञान भान की।
कला उदोत होत काम जामिनि पलाई।।
निरखत जिनचंद्र-वदन...।।1।।
शाश्वत आनन्दस्वाद पायो विनस्यो विषाद।
आन में अनिष्ट-इष्ट कल्पना नसाई।।
निरखत जिनचंद्र-वदन...।।2।।
साधी निज साधकी समाधि मोह व्याधि की।
उपाधि को विराधि कैं आराधना सुहाई।।
निरखत जिनचंद्र-वदन...।।3।।
धन-दिन-छिन आज सुगुनि चिंते जिनराज अबै।
सुधरे सब काज दौल अचल ऋद्धि पाई।।
निरखत जिनचंद्र-वदन...।।4।।

ह्न पण्डित दौलतरामजी

पराश्रय से संसार, स्वाश्रय से मुक्ति

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दिस्वामी के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 46 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

अविद्वान्पुद्गलद्रव्यं योऽभिनन्दति तस्य तत् ।
न जातु जन्तोः सामीप्यं चतुर्गतिषु मुञ्चति ।।46।।

जो अविद्वान (हेय-उपादेय को न जाननेवाला) पुद्गल द्रव्य को श्रद्धता है, उस बिचारे जीव का समीपपना वह पुद्गल द्रव्य नरकादि चार गतियों में कभी भी नहीं छोड़ता।

(गतांक से आगे...)

प्रत्येक वस्तु में द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावरूप अनेक अलौकिक स्वभाव हैं। एक परमाणु एक समय में 14 राजू गमन कर सकता है ह्न ऐसी उसकी पर्याय की ताकत है। एक समय में अनन्त काले रंगवाले परमाणु दूसरे समय मेंअनन्त सफेद रंगरूप परिणमित हो जाते हैं। क्षेत्रांतर की तथा भावांतर की भी ऐसी ही अचिन्त्य शक्ति है। आकाश के एक-एक प्रदेश की अवगाहना में ऐसी शक्ति होती है कि यदि 14 राजू ब्रह्माण्ड के परमाणु सूक्ष्मरूप से परिणमन करें तो एक ही प्रदेश में समा जायें। आकाश भी अचिन्त्य शक्तिवान है। चारों दिशाओं में चले जाओ...चले जाओ....चले जाओ, पर आकाश के क्षेत्र का कहीं अन्त नहीं आयेगा।

उसीप्रकार आत्मा की एक समय की पर्याय में सम्पूर्ण लोकालोक को भूत, वर्तमान, भविष्य की पर्याय सहित जानने की शक्ति है।

अहाहा...स्वभाव की महिमा कौन कह सकता है ? भगवान आत्मा एक समय में तीन काल, तीन लोक को जाने ह्न यह कोई विशेष बात नहीं; यह तो उसका स्वभाव है। ऐसा अचिन्त्य स्वभावी आत्मा अज्ञान दशा में विपरीत परिणमन करके अर्थात् एक समय की पर्याय के राग में एकत्व करके अनन्त संसार खड़ा करता है।

लौकिक में तो थोड़ा कहें तो बहुत समझ जाता है; पर यहाँ बहुत कहने पर

थोड़ा बहुत भी नहीं समझता। भाई ! इसका कारण तो रुचि ही है। रुचि के अनुसार ही वीर्य कार्य करता है, जहाँ जरूरत लगती है, वहाँ पुरुषार्थ करे बिना नहीं रहता।

इस चैतन्य प्रभु का दरबार भी कैसा अद्भुत है ? सम्यग्दर्शन से लेकर आचार्य, उपाध्याय, मुनि आदि सभी निर्मल पर्यायें इसमें विराजमान हैं। ज्ञान, दर्शन, आनन्द, अनन्तवीर्य, प्रभुता, स्वच्छता आदि अनेक गुणों की अनन्त निर्मल पर्यायें अन्दर आत्मा में पड़ी हैं ह्न ऐसे आत्म दरबार को भूलकर अज्ञानी जीव अपनी वर्तमान उपयोग भूमि में राग के कण का अभिनन्दन करता है, उसे अपना मानता है, इसलिये उसका संग पुद्गल नहीं छोड़ेगा। अज्ञानी पुद्गल का संग नहीं छोड़ता तो पुद्गल उसका संग कैसे छोड़े ?

जो तुच्छ राग के कण का अभिनन्दन करता है, उसमें लाभ मानकर प्रशंसा करता है, वह अज्ञानी जीव चारगति में पुद्गल के संग से नहीं छूट सकता। जो विकार का स्वामी बने उससे विकार कैसे छूटे ? इस विकार के प्रेम से तुझे चारगति का भ्रमण नहीं छूटेगा। संयोगी भावों में एकत्व करनेवाले को संयोग मिले बिना नहीं रहता। राग में उपादेय बुद्धि से बंध होता है और बंध से चारगति में पुद्गल का संग होता है।

जीव की राग में तत्परता से यह फल बताया है। अब आगे आचार्यदेव आत्मा की तत्परता का फल 47 वीं गाथा में बताते हैं -

आत्मानुष्ठाननिष्ठस्य व्यवहार बहिःस्थितेः।
जायते परमानन्दः कश्चिद्योगेन योगिनः॥

आत्मस्वरूप में स्थित हुये तथा व्यवहार से दूर रहे योगी को योग से कोई अनिर्वचनीय परम आनन्द उत्पन्न होता है।

जो जीव शरीर, कर्मादि बाह्य पदार्थों का लक्ष्य छोड़कर तथा प्रवृत्ति-निर्वृत्ति लक्षणवाले व्यवहार से दूर होकर आत्मध्यान में लीन होता है, उसे वचन अगोचर परमानन्द की प्राप्ति होती है।

यहाँ प्रवृत्ति-निर्वृत्ति लक्षण व्यवहार माने शुभ-अशुभ भावरूप व्यवहार की बात है। विषय-भोगादि अशुभभाव से निवृत्ति और दया-दान-पूजादि शुभ भावों की प्रवृत्ति

से भी जो दूर होकर आत्मा में लीन होता है, वही योगी परमानन्द को प्राप्त करता है। शुभभाव के ग्रहण और अशुभभाव के त्यागरूप भाव से भी रहित होकर ही आत्म स्वभाव में लीन हुआ जा सकता है।

भगवान आत्मा राग में स्थित हो तो उसे संसार नहीं छोड़ता और यदि वह व्यवहार को छोड़कर स्वभाव में लीन हो जाये तो उसे मोक्ष हुये बिना नहीं रहता।

प्रवृत्ति-निर्वृत्तिरूप शुभ-अशुभ भाव ही व्यवहार है ह्न यही बंध का कारण और संसार है। ये भगवान आत्मा को दुःख की जेल में धकेलनेवाला बंध है। जो धर्मात्मा इस बंध से छूटकर स्वभाव में आता है, वह दुःख की जेल में नहीं पड़ता, उसे आनन्द की लहर मिलती है।

प्रवृत्ति-निर्वृत्तिरूप शुभ और अशुभ दोनों ही भाव जेल हैं। श्रीमद् राजचंद्रजी ने कहा है ह्न

निर्दोष सुख, निर्दोष आनन्द लो जहाँ भी प्राप्त हो।
वह दिव्य अन्तस्तत्त्व जिससे बंधनों से मुक्त हो॥

जहाँ से भी सुख मिले वहाँ से प्राप्त कर ! लेकिन जहाँ सुख होगा, वहीं तो मिलेगा। बाह्य कोई भी क्षेत्र अथवा काल हो; पर अन्तर में एकाग्र होकर आनन्द प्राप्त किया जा सकता है; अतः हे प्रभु ! प्रवृत्ति-निर्वृत्तिरूप विकल्पों रूपी जेल की सलाखें तोड़कर छूट जा ! **(क्रमशः)**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

3 मई से 8 मई	देवलाली	गुरुदेव जयन्ती
18 मई से 4 जून	अलीगढ	शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर
5 जून से 30 जुलाई	विदेश यात्रा	धर्म प्रचारार्थ
3 से 12 अगस्त	जयपुर	शिक्षण-शिविर
27 अगस्त से 3 सितम्बर	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
4 से 14 सितम्बर	मुम्बई	दशलक्षण महापर्व

मंगलायतन, अलीगढ में 18 मई से 4 जून तक और श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में 3 से 12 अगस्त तक आयोजित शिविरों में अवश्य पधारें।

पुद्गल का विशेष स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 27 वीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

एयरसरूवगंधं दोफासं तं हवे सहावगुणं।
विहावगुणमिदि भणिदं जिणसमये सव्वपयडत्तं ।।27।।

जो एक रसवाला, एक वर्णवाला, एक गंधवाला और दो स्पर्शवाला हो, वह स्वभावगुणवाला है; विभावगुणवाले को जिनसमय में सर्व प्रगट (सर्व इन्द्रियों से ग्राह्य) कहा है।

(गतांक से आगे...)

शब्द का कारण आत्मा नहीं है; ओंठ भी शब्द का कारण नहीं है। अहा ! आत्मा शब्द का कारण नहीं है और आत्मा है तो शब्द की उत्पत्ति होती है ह्न ऐसा भी नहीं है। ओंठ हिलने पर ही शब्द होते हों ह्न ऐसा भी नहीं है; क्योंकि ओंठ की वर्गणा आहारवर्गणा है, जबकि शब्द भाषावर्गणा है। आहारवर्गणा से भाषावर्गणा की उत्पत्ति कैसे होगी ?

जगत को यह बात कठिन लगती है; परन्तु वस्तुस्थिति तो यही है। अरे..रे..! यह तू क्या कहता है ? 'मैं पर से भिन्न हूँ' ह्न इतना ख्याल में लेना भी क्या तुझे कठिन पड़ता है ? भाई ! आत्मा शरीर में होने पर भी शरीर से अत्यंत पृथक् है। राग के साथ दिखने पर भी राग से अत्यंत भिन्न है। बापू ! ऐसी दृष्टि किये बिना तुझको सम्यग्दर्शन कैसे होगा ?

अहाहा...! भगवान आत्मा सहज परमपारिणामिक भाव का आश्रय करनेवाले सहज निश्चयनयरूप निज एक ज्ञायकभाव से कभी भ्रष्ट नहीं हुआ। त्रिकाल नित्य एक ज्ञायकभाव आत्मा का सदा एकरूप परमस्वभाव है। भगवान आत्मा ऐसे अपने निजस्वभाव से च्युत होकर, निगोद से लेकर सिद्ध तक की पर्यायों में कभी गया ही

नहीं। अहा ! ऐसे आत्मद्रव्य में एकाग्र होकर उसका ध्यान करने योग्य है।

ध्यान करना...यह तो पर्याय हो गई न ?

भले ही **ध्यान** पर्याय है; परन्तु उसका विषय तो ध्रुव एक भगवान ज्ञायक ही है न ! पर्याय की अस्ति का निषेध कहाँ है ? भाई ! ध्यान करना मोक्षमार्ग है, उसका फल मोक्ष है, ये सब पर्यायें ही है।

कोई कहे हमें पर्याय का कथन ही नहीं करना। बस ! मैं तो अकेला ध्रुव...ध्रुव...ध्रुव ही हूँ।

उससे कहते हैं कि ध्रुव..ध्रुव..ह्न ऐसा निर्णय कौन करता है ? पर्याय या ध्रुव?

पर ! भगवान ने तो पर्याय के सन्मुख देखने का निषेध किया है ?

हाँ ! पर्याय सन्मुख देखने का निषेध किया है। यह तो सत्य है, परन्तु ध्रुव के सन्मुख देखनेवाली तो पर्याय ही है। उसका निषेध कैसे हो सकता है ?

अहा ! आत्मद्रव्य तो एक ज्ञायकभाव, शुद्धपरमस्वभावभाव है। वह ऐसे परम पारिणामिकभावस्वरूप है, जिसमें पर्याय नहीं है; परन्तु इस बात का निर्णय और अनुभव तो पर्याय ही करती है। भाई ! त्रिकाली ध्रुव के सन्मुख हुये बिना तीनकाल में भी धर्म नहीं होता। यही वस्तुस्थिति है।

मैं ध्रुव एक ज्ञायक हूँ ह्न ऐसा कौन जानता है ?

अन्तर-सन्मुख हुई पर्याय। भाई ! यहाँ तो त्रिलोकीनाथ सर्वज्ञ परमेश्वर ऐसा फरमाते हैं कि भगवान आत्मा एक समय में पूर्णानन्द-नित्यानन्द प्रभु है। त्रिकालीध्रुव परमस्वभावभाव एक ज्ञायकभावमय तत्त्व ही आत्मा है और उसका ध्यान करना अर्थात् उसमें दृष्टि-ज्ञान और रमणता करना ही धर्म है।

प्रश्न : देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति करना धर्म है या नहीं ?

उत्तर : नहीं ! देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति करना धर्म नहीं है; क्योंकि ये देव-शास्त्र-गुरु अपने आत्मा से भिन्न परवस्तु हैं। इसलिये उनके सन्मुख देखकर जितनी भक्ति होती है, वह सब राग है, पुण्यभाव है; धर्म नहीं। अहा ! तीनलोक के नाथ

(शेष पृष्ठ 4 पर ...)

छहढाला प्रवचन

मनुष्यगति के दुःखों का वर्णन

बालपने में ज्ञान न लह्यो, तरुण समय तरुणी रत रह्यो।
अर्द्ध मृतक सम बूढापनो, कैसे रूप लखें आपनो ।।१४।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे ...)

हाथी और ऊँट का शरीर बड़ा होने से क्या आत्मा की कोई बड़ाई हो गई? ह्न ना; संयोग से आत्मा की बड़ाई या महत्ता नहीं हो सकती; आत्मा की अधिकता-बड़ाई या महत्ता तो अपने ही ज्ञानस्वभाव से है। मेरा आत्मा ज्ञानस्वभाव के कारण अन्य सब पदार्थों से अधिक है, राग से भी वह अधिक है; आत्मा की ऐसी महत्ता को न जाननेवाला जीव शरीर, कीर्ति, धन, परिवार, मकान, पदवी, खिताब, आवाज की मधुरता या शुभराग के द्वारा अपने को महान समझता है।

अहो ! ज्ञानस्वभावी आत्मा सारे विश्व में श्रेष्ठ है, समय में सार है। विश्व में ऐसा कोई पदार्थ नहीं जो ज्ञानस्वभाव की तुलना में आ सके। अतः हे जीव ! तेरे ज्ञानस्वभावी आत्मा की महिमा को समझ और इसके सिवा शरीर-धन आदि सभी का मोह छोड़। दूसरों के पास धनादि का विशेष संयोग देखकर अपने मन में जलन मत कर ! 'दूसरे देवों के पास में बहुत वैभव और मेरे पास थोड़ा' ह्न ऐसे लोभ की जलन से स्वर्ग के देव भी दुःखी होते हैं ह्न यह बात देवगति के दुःख के कथन में कहेंगे।

यहाँ कहते हैं कि 'कैसे रूप लखै आपनो?' अर्थात् मोही प्राणी अपने स्वरूप का अनुभव कैसे करें? जिसे बचपन में तो कुछ सूझ-बूझ ही नहीं, जवानी विषयों में गँवाता है और वृद्धावस्था में शक्तिहीन अधमरा जैसा होकर रोने लगता है ह्न इसतरह देहबुद्धि में अपना जीवन व्यतीत करनेवाला जीव आत्मा का स्वरूप कैसे पहचाने?

यहाँ 'कैसे रूप लखे आपनो?' ह्न ऐसा कहकर सम्यग्दर्शन की बात ली है। अपना रूप जानना अर्थात् आत्मस्वरूप का दर्शन करना। यही हित का उपाय है, वीतराग-विज्ञान है, यही सन्त-गुरुओं का उपदेश है और इसमें ही मनुष्यभव की सार्थकता है।

देखो ! यहाँ शुभराग की बात नहीं की, 'कैसे रूप लखे आपनो' ह्न ऐसा कहा; परन्तु 'कैसे करे शुभराग' ऐसा न कहा, क्योंकि राग तो जीव अनन्त बार कर चुका; शुभराग किया तभी तो मनुष्य हुआ, इसलिये वह कोई अपूर्व बात नहीं है; परन्तु जीव ने अपना सच्चा रूप

कभी नहीं जाना, सम्यग्दर्शन नहीं किया; अतएव अपना रूप लखना-अनुभव में लाना ही अपूर्व चीज है, उसी में जीव का हित है।

यदि मोह छोड़ के जीव अपना स्वरूप जानना चाहे तो कभी भी जान सकता है; किन्तु यह तो मोह से बाहर में ही लगा रहता है; अतः अपने निजस्वरूप को कैसे देखे ? भाई ! अभी ऐसा अवसर तुम्हें मिला है तो अब आत्महित के लिए उद्यम करना चाहिए। मृत्यु के समय ये सब सामग्री यहीं पड़ी रहेगी; अतः अभी जीते-जी उसका मोह छोड़कर आत्मस्वरूप की पहचान कर !

'इस समय तो खूब कमाई कर लें, बाद में वृद्धावस्था में निवृत्त होकर आत्महित के लिए कुछ कर लेंगे' ह्न ऐसा सोचकर, आत्महित के लिए जीव बे-परवाह रहता है; परन्तु भाई ! वृद्धावस्था आने तक की लम्बी आयु होगी ह्न ऐसा निश्चित कहाँ है? अनेक लोगों की आयु युवावस्था में भी खत्म होती दिखती है; फिर वृद्धावस्था का कहाँ भरोसा? अभी युवा अवस्था में तुम कहते हो कि वृद्धावस्था में करेंगे; परन्तु जब वृद्धावस्था आयेगी और शक्ति क्षीण हो जावेंगी, तब तुमको पछतावा होगा कि अरे रे, जवानी में जब समय था, तब आत्मा की कुछ दरकार नहीं की। अतः भविष्य का वादा छोड़कर अभी से ही आत्महित के लिए विचार करना चाहिए और आत्मा की कमाई कैसे हो ह्न इस उद्यम में लगना चाहिए।

संयोग से आत्मा भिन्न है, फिर भी उसकी सुविधा में तुम संतोष मान रहे हो। अरे भाई ! उस संयोग में तुम कहाँ हो ? तुम्हारा अस्तित्व उसमें नहीं है; तुम्हारा अस्तित्व उससे भिन्न है; तुम तो ज्ञानस्वरूप हो; अपने सच्चे रूप को पहचानो। अन्तर में शांति से विचार करो कि मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ ? मेरा असली स्वरूप कैसा है?

जीव को एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक के भवों में तो विचार करने की शक्ति भी नहीं थी; अब विचार करने की शक्ति मिली है तो आत्महित का विचार करके उसका सदुपयोग करना चाहिए। बहुत से जीव मनुष्य होने पर भी मंदबुद्धिवाले/बिलकुल मूर्ख ही बने रहते हैं। किसी को थोड़ी बहुत बुद्धि हो तो वे भी उसको बाह्यकार्यों में ही लगाये रखते हैं और उसी में अटक जाते हैं; पर आत्मा के हित के लिए अपनी बुद्धि का उपयोग नहीं करते। धन कमाने के उपायों में बुद्धि लगाता है; पर धन की प्राप्ति तो पुण्य के अनुसार होती है। आत्मा के हित की कमाई में बुद्धि नहीं लगाता। अपना महँगा जीवन आत्महित के विचार से रहित होकर व्यर्थ में ही खो देता है। अरे ! तेरा यह अमूल्य जीवन मात्र धन, स्त्री या शरीर के लिए नष्ट मत कर। इसमें आत्महित का ऐसा उपाय कर कि इस संसार के दुःख फिर से न भोगना पड़ें; अपनी आत्मा को मोक्षपथ में लगा। तेरे चैतन्यप्रभु को तूने कभी नहीं देखा, अब तो इसको देख !

चैतन्यप्रभु को देखकर सम्यग्दर्शन पाने का यह श्रेष्ठ अवसर है।

यह अवसर है चैतन्यप्रभु के दर्शन का। अपने चैतन्यप्रभु को देखने की दरकार जीव करते ही कहाँ हैं ? जब निवृत्त हो, कुछ भी काम न हो; तब भी धर्म का वाँचन-विचार करने की बजाय व्यर्थ ही दूसरों की चिन्ता में समय नष्ट करते हैं। धन की चिन्ता, शरीर की चिन्ता, स्त्री-पुत्रादि की चिन्ता, गाँव की चिन्ता, राष्ट्र की चिन्ता और सारी दुनियाँ की चिन्ता ह्न ऐसे पर की अपार चिन्ता में व्यर्थ काल गँवाते हैं; परन्तु स्वयं अपने आत्मा के हित की चिन्ता नहीं करते। पर की चिन्ता करना व्यर्थ है; क्योंकि जीव की चिन्ता के अनुसार पर के कार्य नहीं होते।

देह में टी.बी.हो गया हो, ख्याल भी आ जाये कि अब इस बिछोने से कभी उठनेवाला नहीं और दुकान पर जानेवाला नहीं; तब भी बिछोने में सोता हुआ आत्मा का विचार न करके देह का या दुकान-धन्धे का ही विचार किया करता है और पाप बाँधकर दुर्गति में चला जाता है। यदि आत्मा का विचार करे तो उसे रोकनेवाला कौन है ? कोई नहीं रोकता; परन्तु उसे खुद ही आत्मा की दरकार नहीं है? अरे भाई ! क्या अब भी तुझे भवदुःखों से थकान नहीं लगी ? यदि इस मनुष्यभव में भी नहीं चेतेगा तो फिर कब चेतेगा ?

जीव मनुष्य होकर भी गर्भावस्था से वृद्धावस्था तक या मरण तक हजारों तरह के दुःख सहन करते हैं। शारीरिक दुःखों से भी मानसिक दुःख इतने तीव्र होते हैं कि जो सहन भी नहीं हो सकते और कहे भी नहीं जाते। उन दुःखों से मन ही मन बेचैन रहकर क्लिष्ट होता है और बहुत दुःखी होता है। लोगों में बालकपना निर्दोष समझा जाता है; परन्तु उसमें भी अज्ञानपने के कारण जीव को बहुत कष्ट भोगना पड़ता है। यह बात मिथ्यात्व और अज्ञान से होनेवाले दुःखों की है। जिसको मोह नहीं है, उसको दुःख भी नहीं है।

तीर्थंकरादि का भी बचपन तो होता है; किन्तु उनकी तो बात ही निराली है। उनको तो बचपन में भी देह से भिन्न आत्मा का भान रहता है। तिर्यंचगति में एवं नरकगति में भी असंख्यात जीव सम्यग्दृष्टि हैं। वे सम्यग्दर्शन के प्रताप से सुखरस की गटागटी कर रहे हैं। उन्हें यद्यपि कुछ दुःखवेदना भी है; परन्तु शुद्धचैतन्य के अतीन्द्रियसुख की महत्ता के सामने वह दुःखवेदना नगण्य है। यह तो जिन्हें चैतन्य के सुख का अनुभव नहीं है और जो मिथ्यात्व से अकेले दुःख का ही वेदन कर रहे हैं ह्न ऐसे मिथ्यादृष्टि जीवों के दुःख की कथा है।

चार गतिरूप अवतार मिथ्यात्व के फल से ही होते हैं; यहाँ उनमें से तिर्यंच, नरक व मनुष्य ह्न इन तीन गतियों के दुःखों का वर्णन किया। अब मिथ्यात्व के साथ किसी शुभभाव से पुण्य बाँधकर स्वर्ग में जाये तो वहाँ भी अज्ञान के कारण जीव दुःखी ही है ह्न यह बात देवगति के दुःखों के वर्णन में कहेंगे। ●

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : अभव्यजीव को केवलज्ञान का आवरण करनेवाला केवलज्ञानावरण कर्म है या नहीं ?

उत्तर : है, अभव्य को भी शक्ति अपेक्षा से केवलज्ञान है अर्थात् उसके भी केवलज्ञान होने की शक्ति विद्यमान है; अत: केवलज्ञानावरण कर्म होता है।

प्रश्न : प्रवचन तो वर्षों से सुनते आ रहे हैं, अब तो अन्दर जाने का कोई संक्षिप्त मार्ग बताइये ? जीवन अल्प रह गया है।

उत्तर : आत्मा अकेला ज्ञानस्वभाव चिद्घन है, अभेद है, उसकी दृष्टि करो। भेद के ऊपर लक्ष करने से रागी जीव को राग उत्पन्न होता है, इसलिये भेद का लक्ष छोड़कर अभेद की दृष्टि करो ह्न यही संक्षिप्त सार है।

प्रश्न : राग को सुख का साधन माननेवाला क्या भूल करता है ?

उत्तर : जिसने राग को सुख का साधन माना, उसकी मान्यता में यह बात बैठ गई कि जहाँ राग नहीं होगा, वहाँ सुख भी नहीं होगा। राग के बिना अतीन्द्रिय सुख होता है ह्न यह बात उसकी श्रद्धा में नहीं आई और जहाँ अतीन्द्रिय सुख की श्रद्धा भी न हो, वहाँ उसका उपाय भी कैसे बन सकेगा ? राग के एक विकल्प को भी जो जीव सुख का या ज्ञान का साधन मानता है, वह जीव इन्द्रिय विषयों में ही सुख मानता है और आत्मा के 'स्वयंभू' सुखस्वभाव को नहीं मानता।

प्रश्न : यह सब कुछ जानने में आता है, फिर भी आत्मा जानने में क्यों नहीं आता ?

उत्तर : यह सब ज्ञात हो रहा है, उसका ज्ञाता कौन है ? जिस सत्ता में यह सब जानने में आ रहा है, उसका जाननेवाला जानने में नहीं आता ह्न यही भ्रम है। यह शरीर है, मकान है, धन है, स्त्री-पुत्रादि हैं ह्न ऐसा जो जानने में आता है, वह किसमें ज्ञात होता है ? यह सब जाननेवाले की सत्ता में ज्ञात होता है। जाननेवाले की सत्ता की मुख्यता में यह सब ज्ञात होता है। इस जाननेवाले को जाने नहीं, माने नहीं; यह

भ्रम ही चौरासी के अवतार में भटकने का कारण है। शरीरादि तो इस जाननेवाले से भिन्न वस्तु हैं, उससे भिन्न रहकर जाननेवाला अपनी सत्ता में खड़ा रहकर जानता है। इस जाननेवाले को जाने और माने तो भवभ्रमण से छुटकारा मिल सकता है।

प्रश्न : अज्ञानी पुरुष का संसार क्या है और आत्मज्ञान शून्य विद्वान का संसार क्या है ?

उत्तर : जो पुरुष अज्ञानी है अर्थात् हिताहित को नहीं जानता है, उसका संसार तो स्त्री-पुत्रादि ही हैं। परन्तु जो विद्वान है, शास्त्रों का अक्षराभ्यास भी विशदरूपेण कर चुका है, अनेकों श्लोक-गाथायें अपने स्मृति-पटल पर अंकित कर चुका है; किन्तु आत्मज्ञान से शून्य है, उसका संसार शास्त्र ही हैं।

प्रश्न : अनन्तानुबंधी लोभ किसे कहते हैं ?

उत्तर : अपनी स्वभावपर्याय (सम्यग्दर्शनादि) प्रगट करूँ, तभी वास्तविक संतोष है ह्न ऐसा न मानकर अज्ञानी जीव अशुभ से शुभ में आकर उसी में सन्तुष्ट हो जाये तो ऐसे जीव को वास्तव में राग का लोभ है और इसी को अनन्तानुबंधी लोभ कहते हैं।

प्रश्न : मिथ्यादृष्टि के ज्ञान में द्रव्यस्वभाव भासित नहीं होता तो क्या उसे द्रव्य का अभाव है ?

उत्तर : मिथ्यादृष्टि को द्रव्य भासित नहीं होता, इसलिए उसके ज्ञान में द्रव्य अभावरूप है। ज्ञानी को तो पर का द्रव्य भी भासित होता है, इसलिये अज्ञानी के द्रव्य को ज्ञानी भगवानस्वरूप देखता है। किन्तु अज्ञानी को तो द्रव्य दिखाई ही नहीं पड़ता; अत: उसकी दृष्टि में तो द्रव्य अभावरूप ही है।

प्रश्न : अज्ञानी जीव को मोक्ष की श्रद्धा है या नहीं ?

उत्तर : मोक्ष की श्रद्धा अज्ञानी को नहीं है; क्योंकि शुद्धज्ञानमय आत्मा को वह जानता नहीं; इसलिये उसे मोक्ष की भी श्रद्धा नहीं और मोक्ष की श्रद्धा हुए बिना वह चाहे जितने भी शास्त्र पढ़ ले; तथापि आत्मा का लाभ नहीं हो सकता। शास्त्रों का हेतु तो शुद्धज्ञानमय आत्मा दर्शाकर मोक्ष के उपाय में उद्यमवन्त करना है; परन्तु जिसे मोक्ष की श्रद्धा ही नहीं, उसे शास्त्र पढ़ना कैसे गुणकारी होगा ? ग्यारह अंग पढ़ने पर भी अभव्य अज्ञानी ही रहता है।

समाचार दर्शन ह्न

अष्टान्हिका महापर्व सानन्द सम्पन्न

1. कोटा (इन्द्रविहार) : यहाँ श्री सीमन्धरस्वामी जिनमंदिर में अष्टान्हिका पर्व के पावन प्रसंग पर दिनांक 14 से 21 मार्च तक जयपुर से पधारे पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन प्रात: आपके द्वारा प्रवचनसार, सायंकाल आत्मानुशासन ग्रन्थ पर तलस्पर्शी प्रवचन हुये।

2. कोटा (रामपुरा) : यहाँ अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन, कोटा के तत्त्वावधान में पण्डित कमलेशकुमारजी शास्त्री मौ के प्रात: समयसार ग्रंथाधिराज की 31 से 33 वीं गाथा के आधार पर एवं सांयकाल कर्म सिद्धान्त एवं गुणस्थान पर हुए मार्मिक एवं सारगर्भित प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। इस प्रसंग पर आद. बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के सान्निध्य में गहन तत्त्वचर्चा का लाभ मिला।

3. मुम्बई (दादर) : यहाँ पर्व के अवसर पर विदुषी राजकुमारीजी जैन सनावद द्वारा प्रतिदिन प्रात: भेदज्ञान, दोपहर में धवला ग्रंथ एवं रात्रि में 'धर्म ही विज्ञान, विज्ञान ही धर्म है'ह्न विषय पर मार्मिक कक्षा एवं प्रवचनों ने उपस्थित जन समुदाय का मन मोह लिया।

4. नकुड़ (सहारनपुर) : यहाँ पर्व के पावन अवसर पर सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रन्थ पर हुए प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। प्रतिदिन सायंकाल बाल कक्षा एवं जिनेन्द्र भक्ति होती थी। रात्रि में पण्डित प्रयंकजी शास्त्री सागर द्वारा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। अंतिम दिन भव्य शोभायात्रा निकाली गई।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्यक्रम भी उक्त दोनों विद्वानों के सहयोग से सम्पन्न हुये।

ज्ञातव्य है कि विधान का आयोजन श्री विजयजी जैन (रावलपिंडी वाले) और श्री सुशीलजी जैन की ओर से किया गया था।

5. इटावा (उ.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन चन्द्रप्रभ मंदिर डांडा में पर्व के अवसर पर ब्र.अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री पिड़ावा के निर्देशन में श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का उद्घाटन श्री चंद्रप्रकाशजी इटावा के करकमलों से ध्वजारोहण पूर्वक हुआ। इस प्रसंग पर पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री फिरोजाबाद एवं पण्डित योगेशजी शास्त्री अलीगंज के प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही मंगलायतन से पधारे छात्र अकलंकजी जैन, आगमजी जैन एवं पवनजी जैन ने अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं बाल कक्षाओं का संचालन किया।

शिविर का आयोजन श्री स्वरूपचंदजी जैन परिवार इटावा की ओर से किया गया था।

6. अलवर (राज.) : यहाँ श्री रत्नत्रय जिनमंदिर, चेतन एन्क्लेव में अष्टान्हिका महापर्व

के अवसर पर नवलब्धि मण्डल विधान व शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर पण्डित कोमलचंदजी द्रोणगिरि, पण्डित किशनचंदजी अलवर, पण्डित मधुकरजी जलगाँव के प्रवचनों का लाभ समाज को प्राप्त हुआ साथ ही बालवर्ग हेतु विशेष कक्षाओं का भी आयोजन किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम पण्डित तन्मयजी शास्त्री एवं पण्डित सुमित शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न हुये। पर्व के अन्तिम दिवस पर यागमण्डल विधान का भी आयोजन किया गया।

7. **अजमेर (राज.) :** यहाँ श्री सीमंधर जिनालय में महापर्व के अवसर पर नियमसार कलश मंडल विधान का आयोजन किया गया। दिनांक 14 मार्च को मंगल कलश शोभायात्रा आयोजित की गई तत्पश्चात् पूर्व जिला प्रमुख श्री पुखराजजी पहाड़िया द्वारा ध्वजारोहण किया गया। विधान का उद्घाटन श्री प्रेमचंदजी जैन, महावीर टेन्ट हाउस ने किया।

इस अवसर पर पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर के विधान की जयमाला व नियमसार ग्रन्थ के आधार से हुये प्रवचनों का लाभ समाज को मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित अश्विनजी नानावटी बाँसवाड़ा एवं श्री हीराचंदजी बोहरा के सहयोग से सम्पन्न हुये। रात्रि में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

तीन लोक मण्डल विधान सम्पन्न

भवानीपुर (कोलकाता) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री दिगम्बर जैन मंदिर पद्मोपुकुर, भवानीपुर में दिनांक 1 से 8 अप्रेल, 08 तक आठ दिवसीय तीन लोक मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर देश विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रतिदिन प्रात: समयसार की 14वीं गाथा पर मार्मिक प्रवचन हुये। समाज की विशेष मांग पर अन्तिम दिनों में सायंकाल भी आपके सरस प्रवचनों का लाभ मिला। प्रारंभ में चार दिन ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल' ललितपुर के योगसार पर सारगर्भित प्रवचन हुये। आपके अतिरिक्त पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा प्रतिदिन 'तीन लोक के अकृत्रिम चैत्यालय' विषय पर हुई विशेष कक्षा एवं दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक पर हुये प्रवचनों का समाज ने भरपूर लाभ लिया।

विधान के समस्त कार्य बाल ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, दिल्ली के कुशल निर्देशन में पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुबोधकुमारजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर एवं स्थानीय विद्वान अभिनयजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये।

विधान का आयोजन श्री फूलचंदजी, राजमलजी, भागचंदजी, कमलकुमारजी एवं अशोककुमारजी पाटनी परिवार की ओर से किया गया था।

उद्घाटन एवं वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ नवनिर्मित श्री वीतराग विज्ञान भवन और छात्रावास के उद्घाटन के साथ-साथ श्री महावीरस्वामी जिनमंदिर का 16 वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 28 फरवरी से 2 मार्च, 08 तक सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर श्री 170 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का झण्डारोहण श्री शिखरचंदजी मोदी परिवार के करकमलों से हुआ।

समारोह में पूज्य गुरुदेव श्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित धन्यकुमारजी भौंरे कारंजा, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ़, डॉ. राकेशजी शास्त्री अलीगढ़, पण्डित अरुणजी मोदी सागर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ़ एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई के प्रवचनों का लाभ मिला।

कार्यक्रम के मध्य दिनांक 1 मार्च को भव्य जिनेन्द्र शोभायात्रा का आयोजन किया गया। 2 मार्च को वीतराग-विज्ञान भवन के उद्घाटन समारोह के प्रसंग पर श्री अनंतराय ए. सेठ मुम्बई के करकमलों से नवीन भवन में ध्वजारोहण हुआ। भवन का उद्घाटन ड्रा द्वारा चयनित श्री निखिल सुखानंदजी मोदी परिवार द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुमन निर्मलकुमारजी जैन ने की। मुख्यअतिथि श्री उत्कर्ष राकेश मोदी थे। विशिष्ट अतिथियों के रूप में ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, श्री मुकेशजी देवलाली एवं मुम्बई हाई कोर्ट के न्यायाधीन श्री श्रीषेण डोणगांवकर मंचासीन थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के कुशल निर्देशन में पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित प्रियंकजी शास्त्री रहली, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित मनीषजी शास्त्री खड़ैरी एवं पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर ने सम्पन्न कराये।

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री का विदेश कार्यक्रम

डॉ. भारिल्ल की तरह ही उनके शिष्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली भी कुछ वर्षों से धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं, उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है ह्न

19 जून से 26 जून - **डलास**, 27 जून से 1 जुलाई - **ह्यूस्टन**, 2 से 8 जुलाई - **शिकागो**, 9 से 16 जुलाई - **सान् फ्रांस्कोसिस**, 17 से 23 जुलाई - **अटलान्टा**, 24 से 27 जुलाई **रिले**, 28 जुलाई से 3 अगस्त - **मियामी,** 4 से 11 अगस्त - **टोरन्टो**।

आप उन्हीं स्थानों पर रुकेंगे, जहाँ डॉ. भारिल्ल रुकेंगे। डॉ. भारिल्ल का विस्तृत विदेश कार्यक्रम **अप्रैल अंक** में प्रकाशित किया जा चुका है। अतिरिक्त स्थान ह्न ह्यूस्टन में भूपेश सेठ-281-261-4030, अटलान्टा में महेन्द्र दोसी-770-442-8559, रिले में किरीट शाह- **E-mail : kirit125@yahoo.com**, टोरन्टो में संजय जैन - 905-686-5245 ।

महावीर विद्यानिकेतन ह्न

शुभारंभ एवं साक्षात्कार

नागपुर (महा.) : यहाँ आचार्य कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा नवनिर्मित श्री वीतराग-विज्ञान भवन में इस वर्ष **जून माह** से महावीर विद्या निकेतन का शुभारंभ किया जा रहा है। इस वर्ष विद्यालय में **कक्षा सातवीं और आठवीं** में कुल 20 छात्रों को प्रवेश दिया जायेगा। प्रवेश की योग्यता हेतु पिछली कक्षा में न्यूनतम 60 प्रतिशत अंक एवं अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। इन विद्यार्थियों को नागपुर के उत्तम विद्यालयों में प्रवेश दिलाया जायेगा। ये सभी छात्र श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक **पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर** और **पण्डित प्रसन्न शेट्टे कोल्हापुर** के निर्देशन में अध्ययन करेंगे।

नागपुर में 11 मई से 18 मई, 08 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर में ही महावीर विद्या निकेतन में प्रवेश इच्छुक छात्रों का साक्षात्कार लिया जायेगा। प्रवेश के इच्छुक छात्रों को इस शिविर में उपस्थित रहना अनिवार्य है।

प्रवेश के इच्छुक छात्र और उनके अभिभावक आवेदन प्रपत्र और अन्य जानकारी प्राप्त करने हेतु निम्न पते पर सम्पर्क करें। ह्न जयकुमार देवडिया/सुदीप जैन/अशोक जैन

श्री महावीर विद्या निकेतन, श्री महावीरस्वामी दि. जैन मंदिर, नेहरु पुतला के सामने, इतवारी, नागपुर। मो. 9371270638

पाटनीजी का साहित्य गुजराती में

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के प्रभावना योग के अनन्य सहयोगी अध्यात्मरसिक वयोवृद्ध विद्वान स्व. नेमीचन्दजी पाटनी ने स्वामीजी का अनेक वर्षों तक साक्षात् समागम प्राप्तकर तथा निरन्तर निजी स्वाध्याय करके जिनवाणी का जो रहस्य उनके चिन्तन में आया, उसे उन्होंने अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में स्वान्त:सुखाय लिखा; जो सुखी होने का उपाय भाग-1 से 6 तथा आत्म सम्बोधन, वस्तुस्वातन्त्र्य आदि पुस्तकों के रूप में उपलब्ध है।

इनमें से **1.** निर्विकल्प आत्मानुभूति से पूर्व (पृष्ठ-128), **2.** अपनत्व का विषय (पृष्ठ-92), **3.** भेदविज्ञान का यथार्थ प्रयोग (पृष्ठ-35), **4.** सिद्धस्वभावी ध्रुव की मुख्यता (पृष्ठ-54) ह्न इन चार पुस्तकों का पण्डित रमणिकलालजी सावला की प्रेरणा से श्री मणिलालजी गाला ने गुजराती में अनुवाद करके प्रकाशित किया है। इन सभी पुस्तकों का विषय इनके नामानुसार ही है। सभी पुस्तकें स्वाध्याय हेतु बिना मूल्य रखी गई है।

ह्न **बच्चूभाई पारिख**, विलेपार्ले, मुम्बई, मो. 09821508893

मुमुक्षु आश्रम में विधान

कोटा (मुमुक्षु आश्रम) : यहाँ दिनांक 22 मार्च को होली के अवसर पर प्रात: 8 बजे से 12 बजे तक ध्वजारोहण एवं पंचमेरु विधान हुआ। दोपहर में पण्डित कमलेशजी शास्त्री मौ के मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

विधान के समस्त कार्य पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित सन्मतिजी शास्त्री पिड़ावा ने सम्पन्न कराये । सभी कार्य पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

पाठकों के पत्र...

सब कुछ एक जगह

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल कृत समयसार की **ज्ञायकभावप्रबोधिनी हिन्दी टीका** को पढ़कर श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट, सोनागिर के ट्रस्टी **श्री केशरीमलजी पाटनी** लिखते हैं ह्न

''डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल कृत समयसार की ज्ञायकभाव प्रबोधिनी हिन्दी टीका का सामूहिक स्वाध्याय परमागम मंदिर, सोनागिर में हम सब पिछले चार माह से कर रहे हैं।

वस्तुत: यह कृति सभी के लिये पठनीय, मननीय और अनुकरणीय सिद्ध हुई है। यह कृति तीव्र, सामान्य और मन्दबुद्धि वाले सभी के लिये भावभासन हेतु उपयोगी रही है।

इसमें आचार्य कुन्दकुन्द कृत मूल गाथायें, आचार्य अमृतचंद्र कृत आत्मख्याति संस्कृत टीका एवं आचार्य जयसेन कृत तात्पर्यवृत्ति संस्कृत टीका के महत्वपूर्ण अंश आदि सभी कुछ आ गया है। इसमें डॉ. भारिल्ल कृत गाथा और कलशों का भावगर्भित पद्यानुवाद भी उपलब्ध है।

मुझे लगता है कि इसमें सबकुछ एक जगह उपलब्ध हो गया है। प्रत्येक गाथा व कलश के अन्त में लिखी गई टिप्पणी/भावार्थ में तो सभी का निचोड़ आ गया। मनोयोग से इसका स्वाध्याय करने पर कुछ अस्पष्ट नहीं रहता।

भविष्य में भी आप इसीप्रकार के मूलग्रंथों की टीकायें लिखें ह्न ऐसी हम सबकी मंगल भावना है। डॉ. भारिल्ल के विशेष चिंतन, अविरल लेखन की अनुमोदना करते हुए आपकी दीर्घ आयु की मंगल कामना करते हैं।''

डाक टिकिट भेजकर नि:शुल्क मंगा लें..

आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा रचित समयसार ग्रन्थ की डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल कृत ज्ञायकभाव प्रबोधिनी हिन्दी टीका, पृष्ठ 648, कीमत 50 रुपये का नि:शुल्क वितरण श्री अजितकुमारजी तोतूका परिवार, जयपुर की ओर से साधर्मी भाई-बहिनों, ब्रह्मचारियों, मंदिरों, वाचनालयों हेतु किया जा रहा है।

इच्छुक महानुभाव 15/- रुपये के फ्रेश डाक टिकिट निम्न पते पर भेजकर मँगा लेवें। ध्यान रहे यह योजना **15 जून, 2008** तक ही है। ह्न नि:शुल्क साहित्य वितरण विभाग

श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)

42 वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर, मंगलायतन में

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की प्रेरणा से निर्मित पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित 42 वाँ श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 18 मई से 04 जून, 2008 तक मंगलायतन (अलीगढ़-उ.प्र.) में होना निश्चित हुआ है। शिविर के माध्यम से अध्ययन करानेवाले बन्धुओं (अध्यापकों) एवं मुमुक्षु भाई-बहिनों को शिक्षण-विधि में प्रशिक्षित किया जायेगा।

इस अवसर पर आपको डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित कैलाशचन्दजी बुलन्दशहर, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, पण्डित शैलेषभाई शाह तलौद, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री अलीगढ़, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया अलीगढ़, पण्डित संजयजी शास्त्री अलीगढ़ आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों/कक्षाओं का लाभ मिलेगा।

प्रशिक्षण शिविर में पहुँचने वाले भाई-बहनों को इसकी पूर्व सूचना निम्नांकित पते पर अवश्य भेज देवें, ताकि उनके ठहरने एवं भोजनादि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट,
ए-4, बापूनगर, जयपुर ह्न 15 (राज.)
फोन नं. (0141) 2705581/2707458

ह्न तीर्थधाम मंगलायतन
अलीगढ़ आगरा मार्ग, डी. पी. एस. के सामने,
सासनी, जिला-महामायानगर (उ.प्र.)

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का ह्न

उन्तीसवाँ राष्ट्रीय अधिवेशन मंगलायतन में

(रविवार, दिनांक 25 मई 2008)

अधिवेशन के पूर्व राष्ट्रीय कार्यकारिणी की मीटिंग 24 मई, 08 को तीर्थधाम मंगलायतन में आयोजित की गई है, जिसमें फैडरेशन द्वारा अभी तक किये गये कार्यों की समीक्षा एवं आगामी कार्यक्रमों की योजना पर विचार किया जायेगा।

अधिवेशन में सभी शाखाओं के अधिक से अधिक सदस्यों को उपस्थित होना है। शाखायें कम से कम 2 प्रतिनिधि अधिवेशन हेतु अवश्य भेजें। अपने पहुँचने की पूर्व सूचना निम्नलिखित पतों पर देवें ह्न

केन्द्रीय कार्यालय ह्न अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, ए-4, बापूनगर, जयपुर ह्न15
कार्यक्रम स्थल ह्न तीर्थधाम मंगलायतन, आगरा अलीगढ़ मार्ग, डी.पी.एस. के सामने, सासनी, जिला ह्न महामायानगर (उ. प्र.) फोन नं.(0571) 2223391